सूज़न बी. अन्थोनी

महिला अधिकारों की योद्धा

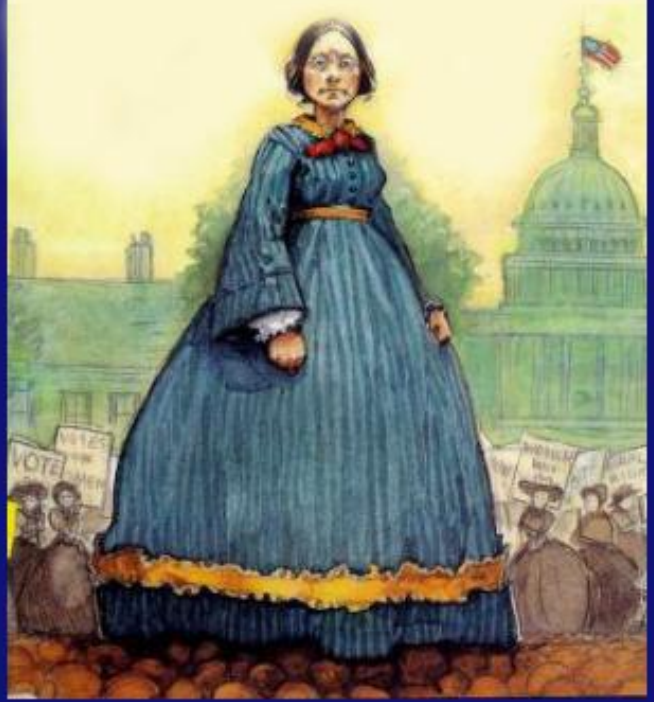

सूज़न बी. अन्थोनी

महिला अधिकारों की योद्धा

लेखक : डेबोरा

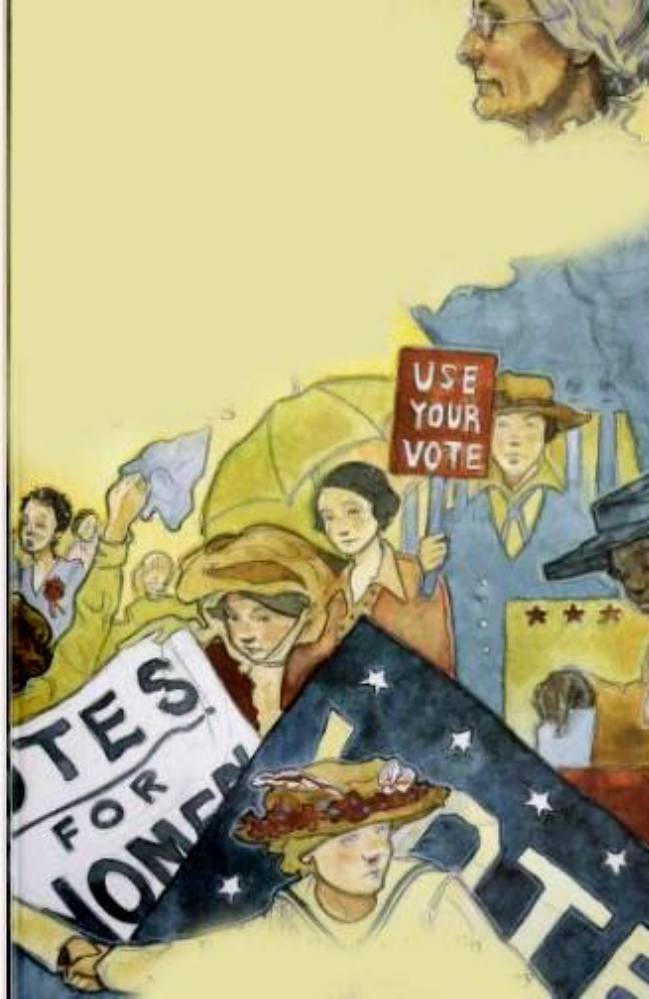

सूज़न बी. अन्थोनी

महिला अधिकारों की योद्धा

"असफलता असंभव है!"

- सूज़न बी. अन्थोनी

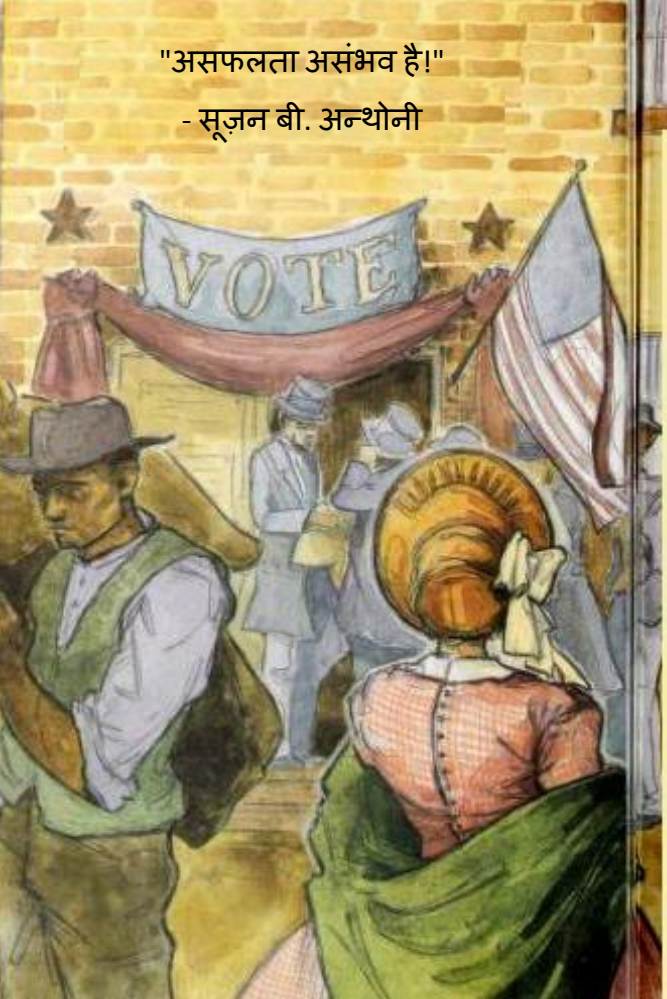

एक मेहनती लड़की

सूज़न बी. अन्थोनी का जन्म 1820 में हुआ. जब सूज़न का जन्म हुआ तब अमरीका में सभी लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीने का अधिकार नहीं था.

कुछ लोग गुलाम थे, जो सभी अधिकारों से वंचित थे. महिलाओं के अधिकार भी बहुत सीमित थे. शादीशुदा महिलायें ज़मीन की मालिक नहीं बन सकती थीं. लड़कियों को कॉलेज में पढ़ने की इज़ाज़त नहीं थी. कोई भी महिला वोट नहीं कर सकती थी.

सूज़न, अमरीका के इन हालातों को बदलना चाहती थीं. वो मानती थीं कि अमरीका में महिलाओं को भी पुरुषों की तरह ही वोट देने का अधिकार मिलना चाहिए. अपनी मित्र एलिज़ाबेथ केडी स्टैंटन के साथ मिलकर, सूज़न ने सारी ज़िन्दगी महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई लड़ी. महिलाओं के वोट के अधिकार की लड़ाई इतनी लम्बी चलेगी, इसका सूज़न को भी कोई अंदाज़ नहीं था.

सूज़न ब्रोनेल अन्थोनी का जन्म मेसाचुसेट्स में हुआ था. उनके पिता डेनियल, एक क्वेकर थे. उनका विश्वास कड़ी मेहनत और एक सादगी की ज़िंदगी जीने में था.

सूज़न के पिता की एक मिल थी जहाँ पर युवा महिलाएं रुई से कपड़ा बनाती थीं. उनमें से ग्यारह लड़कियां सूज़न के बड़े परिवार के साथ ही रहती थीं.

सूज़न और उसकी बहनें घर के सारे काम में – खाना पकाने, सफाई आदि में अपनी माँ की मदद करती थीं. बीस डबलरोटी पकाने में उन्हें लगभग पूरा दिन लग जाता था!

उस समय बहुत से लोग लड़कियों को स्कूल नहीं भेजते थे. पर सूज़न के पिता का लड़कियों की शिक्षा में पूरा विश्वास था.

चार साल की उम्र में ही सूज़न पढ़ना सीख गई. पर कम रोशनी में घंटों किताबें पढ़ने के कारण सूज़न की आँखें दुखने लगीं थीं. कम रोशनी में पढ़ने के कारण सूज़न की दाईं आँख तिरछी हो गई थी. फिर पूरी ज़िंदगी वो आँख तिरछी ही रही.

उसके बावजूद सूज़न को पढ़ने में बहुत आनंद आता था. वो कुछ समय के लिए स्कूल भी गई. पर ज़्यादातर शिक्षा उसने घर पर ही पाई.

जब सूज़न ग्यारह साल की हुई तब उसने अपने पिता से एक विनती की. उसने एक मर्द की बजाए, एक महिला को काम करने वाली लड़कियों का सुपरवाइजर बनाने को कहा. सूज़न ने देखा कि वो महिला, मर्द सुपरवाइजर से कहीं ज़्यादा समझदार थी.

पर सूज़न के पिता ने ऐसा करने से मना किया. वैसे पिता औरत-मर्द की बराबरी में विश्वास रखते थे फिर भी जो कुछ चल रहा था वो उसे बदलने को तैयार नहीं थे. उस ज़माने में मर्द ही सुपरवाइजर होते थे.

वैसे सूज़न अपने पिता को बहुत चाहती थीं, पर पिता का यह निर्णय उसे बिल्कुल पसंद नहीं आया.

"एक महिला सुपरवाइजर क्यों नहीं बन सकती? क्यों न हम दुनिया को बदलना शुरू करें?" सूज़न ने सोचा.

सूज़न ने बचपन से ही कठिन सवाल पूछना शुरू कर दिए थे. उसने कभी भी कठिन सवाल पूछना बंद नहीं किए.

जब सूज़न तेरह-चौदह साल की थी तब परिवार पर भारी गर्दिश आई. पिता की मिल बंद हो गई और उनका घर भी बिक गया.

परिवार की सहायता करने के लिए सूज़न एक बोर्डिंग स्कूल में टीचर बन गई. पर वहां उसे अपने परिवार की बहुत याद आती थी.

पर जल्द ही सूज़न अकेले रहने की अभ्यस्त हो गई. स्कूल में अच्छे प्रदर्शन के कारण वो जल्द ही हेड-टीचर बन गई. वैसे सूज़न की कई लड़कों से दोस्ती थी, पर अंत में उसने शादी नहीं करने का पक्का निर्णय लिया. वो किसी भी हाल में अपनी आज़ादी नहीं खोना चाहती थी.

स्कूल में दस साल पढ़ाने के बाद सूज़न अन्य चुनौतियों के साथ जूझने को तैयार हुई. सूज़न, अमरीका को एक बेहतर देश बनाना चाहती थी. पर एक अकेली महिला भला क्या कर सकती थी?

"गुलामी, बहुत घृणित चीज़ है....."
- सूज़न बी. अन्थोनी 1854

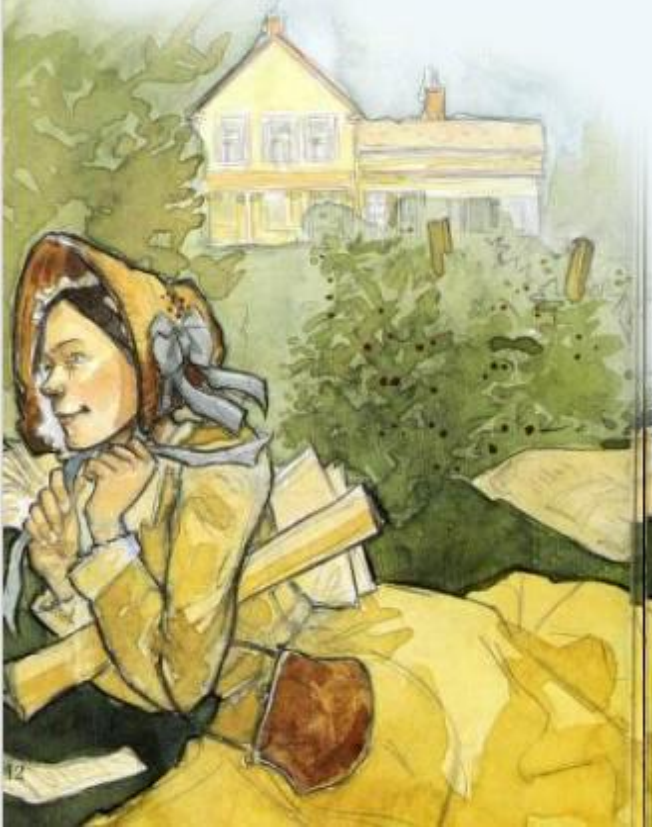

सूज़न का बदलाव के लिए काम

जब सूज़न अपने परिवार के साथ रोचेस्टर, न्यू-यॉर्क के पास फार्म पर रहने गई, तब उसकी उम्र तीस साल थी.

शुरू में सूज़न ने अपने परिवार की फार्म पर मदद की. पर कुछ समय बाद उसने सारा समय अपने सपनों को पूरा करने में लगाया. वो सपना था - अमरीका को सुधारना.

खेतों में पानी लगाने की बजाए सूज़न अक्सर किसी मीटिंग के लिए चली जाती थी. यह एक आम बात थी!

सूज़न के बहुत से मित्र "अबोलिशनिस्ट" थे - यानि वे गुलामी प्रथा को समाप्त करना चाहते थे.

सूज़न और उसका परिवार "अंडरग्राउंड रेलरोड" के सदस्य बने. वो गुलामों की आज़ादी के दौरान उन्हें कनाडा पलायन करने में मदद करते थे. सूज़न का घर "अबोलिशनिस्ट" के मिलने-बैठने और चर्चा का अड्डा बना.

फिर 1851 में सूज़न, सेनेका फॉल, न्यू-यॉर्क गई. वहां सड़क पर इत्तिफाक से उसकी मुलाकात एलिज़ाबेथ केडी स्टैंटन से हुई.

सूज़न, मिसेज़ स्टैंटन से मिलकर बहुत उत्साहित हुई. मिसेज़ स्टैंटन, महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए काफी प्रसिद्ध थीं.

सूज़न को पता था कि मिसेज़ स्टैंटन ने लुक्रेटिए मोट्ट के साथ मिलकर जुलाई 1848 में महिला अधिकारों की लड़ाई की पहली बैठक आयोजित की थी.

उस मीटिंग में मिसेज़ स्टैंटन ने ऐलान किया था कि महिलाएं, पुरुषों के बराबर होती हैं. उन्होंने कहा था कि विवाहित महिलाओं को भी संपत्ति का अधिकार मिलना चाहिए. सबसे महत्वपूर्ण था मिसेज़ स्टैंटन का विश्वास कि हर महिला को वोट का अधिकार भी मिलना चाहिए.

उस समय एलिज़ाबेथ केडी स्टैंटन द्वारा अमरीकी महिलाओं के लिए वोट की मांग, लोगों को बिल्कुल मूर्खतापूर्ण लगी. पर सूज़न, मिसेज़ स्टैंटन की बात से पूरी तरह सहमत थीं. सूज़न यह जानती थी कि जब तक महिलाओं को वोट का अधिकार, संपत्ति का अधिकार नहीं मिलेगा तब तक वो देश की सम्पूर्ण नागरिक नहीं बन पाएंगी, तब तक उनका अपने जीवन पर नियंत्रण भी नहीं होगा, और वो पुरुषों के साथ बराबरी का दर्ज़ा नहीं प्राप्त कर पाएंगी.

महिलाओं के अधिकारों का मोर्चा

सेनेका फाल्स, न्यू-यॉर्क, 19-20 जुलाई 1848

"कोई भी सच्ची महिला,
हमेशा अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगी जिएगी."
- सूज़न बी. अन्थोनी 1857

मित्र और लड़ाकू

जल्दी ही सूज़न और मिसेज़ स्टैंटन में गहरी मित्रता हो गई और वे दोनों महिला अधिकारों की लड़ाई की अगुआ लीडर बन गईं.

क्योकि मिसेज़ स्टैंटन को अक्सर अपने छोटे बच्चों की देखभाल के लिए घर पर रहना पड़ता था, इसलिए प्रचार-प्रसार की ज़्यादातर ज़िम्मेदारी सूज़न ही निभाती थी.

सूज़न ने महिलाओं के अधिकारों का सन्देश न्यू-यॉर्क राज्य में सभी लोगों के बीच फैलाया. सूज़न बी. अन्थोनी को अब ज़िन्दगी में वो काम करने को मिला था जो उनके सपनों के सबसे करीब था.

सूज़न अधिकतर समय यात्रा करती थी. वो अकेले ट्रेन और घोड़ा-गाड़ी से सफर करती थी. कभी-कभी उसे खुली फिसलगाड़ी (स्लेज) पर स्नो में भी यात्रा करनी पड़ती थी.

यात्रा-खर्च निकालने के लिए सूज़न अपने हरेक भाषण के लिए हरेक से 25-सेंट लेती थीं. कभी-कभी उन्हें सुनने के लिए बहुत से लोग आते. पर कभी बहुत कम लोग ही आते थे.

सूज़न, लोगों के सामने अपनी बातें बहुत सरल भाषा में पेश करती थी. जो क़ानून महिलाओं को कष्ट पहुंचाते हैं उन्हें बदलने की सख्त ज़रुरत है, ऐसा वो लोगों को समझाती थीं. वो महिलाओं से खुदके पैरों पर खड़े होकर स्वतंत्र और ताकतवर बनने की अपील करती थीं. सूज़न कहती थीं कि महिलाओं को अपनी मनमर्ज़ी से अपने जीवन के विकल्प ढूंढ़ने चाहिए. उन्हें खुद काम करके अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए. सूज़न बी. अन्थोनी ने भी अपने जीवन में वही किया था.

"हमें लगातार अपना काम ज़ारी रखना होगा..."

- सूज़न बी. अन्थोनी 1903

वोट का हक़

महिलाओं के बीच जागृति फ़ैलाने के साथ-साथ सूज़न गुलामी प्रथा समाप्त करने के लिए "अबोलिशनिस्ट" के साथ भी काम कर रही थीं.

"अबोलिशनिस्ट" का बस एक ही लक्ष्य था - गुलामी से लोगों को मुक्ति दिलाना. वे खुश थे कि सूज़न उनके आंदोलन के लिए भी कार्यरत थी. पर "अबोलिशनिस्ट" लोग, महिला अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार नहीं थे.

1861 में अमरीका में गृह युद्ध शुरू हुआ. वो युद्ध असल में उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के लोगों के बीच में एक बड़ा संघर्ष था.

फिर1865 में गृह युद्ध ख़त्म हुआ. गुलामी समाप्त होने के बाद, सूज़न को उम्मीद थी कि अमरीका में सभी लोगों को - गोरों और अश्वेतों सभी को, पुरुषों और महिलाओं दोनों को, वोट का अधिकार मिलेगा.

1865 में अमरीकी सरकार ने संविधान में चौदहवां संशोधन पारित किया. उसमें पूर्व के गुलामों को, वोट का अधिकार दिया गया - पर सिर्फ पुरुषों को. सभी महिलाओं - चाहें वो गोरी हों या अश्वेत, उन्हें अभी भी वोट देने का अधिकार नहीं मिला था.

इस भेदभाव को लेकर कई महिलाओं - सूज़न, मिसेज़ स्टैंटन, सोजॉर्नर ट्रुथ - जो पहले खुद गुलाम थीं, में बहुत गुस्सा था. क्योंकि उनके पास अन्य कोई चारा नहीं था, इसलिए उन्होंने अपनी लड़ाई लगातार ज़ारी रखी.

सूज़न और मिसेज़ स्टैंटन ने एक के बाद एक करके कई राज्यों का दौरा किया. वहां उन्होंने महिलाओं में वोट के अधिकार के बारे में जागरूकता फैलाई. उन्होंने "नेशनल वुमन सफरेज एसोसिएशन" की स्थापना भी की.

लोगों के सोच में बदलाव और कानून में सुधार लाना, यह दोनों काम बहुत मुश्किल थे. जिन महिलाओं का समानता में विश्वास था, उनमें में अमरीका में परिवर्तन की दिशा को लेकर बहुत से आपसी मतभेद थे. पर सूज़न ने अपना संघर्ष लगातार ज़ारी रखा.

"मेरे प्राकृतिक अधिकारों और नागरिक हकों .....
दोनों को अनदेखा किया जा रहा है."
- सूज़न बी. अन्थोनी,1873

हार असंभव है!

1872 में - सूज़न ने अमरीकी कानूनों का परीक्षण किया. इलेक्शन वाले दिन वो और सौ अन्य महिलाएं पोलिंग स्टेशन पर अपने वोट डालकर आईं.

"मैं पोलिंग स्टेशन गई, और वहां अपना वोट डालकर आई," सूज़न ने अपनी प्रिय मित्र मिसेज़ स्टैंटन को लिखा.

जैसे उम्मीद थी, उसके बाद सूज़न को गिरफ्तार किया गया. उन्हें जेल में नहीं डाला गया, पर उनके ऊपर बाकायदा मुकदमा चला. जज ने सूज़न को दोषी पाया. जब सूज़न के बोलने का समय आया तब वो कूदकर अपने पैरों पर खड़ी हुईं और उन्होंने एक दमदार भाषण दिया. पर उससे कोई लाभ नहीं हुआ.

4 जुलाई 1876 को अमरीकी राष्ट्र ने 100 वर्ष पूरे किये. जश्न मानते वक्त फ़िलेडैल्फ़िया में स्वतंत्रता का घोषणापत्र पढ़ा गया. कार्यक्रम की समाप्ति के बाद लोगों को तब बहुत आश्चर्य हुआ जब सूज़न ने उन्हें एक नया घोषणापत्र थमाया - महिलाओं के अधिकार का घोषणापत्र!

सूज़न और अन्य महिलाएं अपनी लड़ाई को, कांग्रेस में ले गईं. 1887 के शुरू में, कांग्रेस ने अमरीकी संविधान को बदलने की बात सोची जिससे कि महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिल सके. परन्तु एक साल बाद कांग्रेस अपने वादे से मुकर गई.

फरवरी 1906 में सूज़न बी. अन्थोनी की उम्र 86 वर्ष की हुई. उनकी प्रिय मित्र मिसेज़ स्टैंटन का कुछ साल पहले ही देहांत हो चुका था. तब सूज़न ने आखिरी मीटिंग में भाग लिया और आंदोलन के भविष्य के लिए धन इकट्ठा किया.

जब आखिरी भाषण देने का मौका आया तब
सूज़न मुश्किल से ही अपने पैरों पर खड़ी हो पाईं.
पर दर्शकों ने उनके भाषण के बाद खूब तालियां बजायीं.
सूज़न ने स्पष्ट आवाज़ में महिलाओं से हार न मानने
का आग्रह किया. "हारना, असंभव है!" वो चिल्लाईं.

समाप्त

उसके कुछ हफ़्तों बाद सूज़न बी. अन्थोनी का देहांत हो
गया. उनकी मृत्यु के चौदह साल बाद यानि 1920 में ही,
अमरीकी महिलाओं को वोट का अधिकार मिला!